International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-04-2020; Accepted: 30-04-2020; Published: 08-05-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 07-08

उपन्यासकार भुवनेश्वर मिश्र के उपन्यासों की कथ्यगत विवेचना

डॉ. राजेश कुमार चन्देल
हिन्दी विभाग, राज इंटर कॉलेज, बेतिया, प.चम्पारण, बिहार, भारत

सारांश
भुवनेश्वर मिश्र हिन्दी उपन्यास के अग्रणी उपन्यासकारों में से एक है। हिन्दी उपन्यास लेखन, जब अपने आरंभिक अवस्था में ही सस्ती लोकप्रियता की सिढियाँ चढ़ रहा था। चारो तरफ तिलस्मी ऐयारी और रोमांचक उपन्यासों की धूम मची थी, ऐसे समय में भुवनेश्वर मिश्र के, मनुष्य की दृष्टि से मनुष्य को देखनें के तरीके नें हिन्दी उपन्यास के पूरे मिजाज को बदलकर रख दिया। मिश्र जी ने अपने प्रभावशाली लेखन के माध्यम से उपन्यास को काल्पनिकता और ऐतिहासिकता के शिखर से नीचे ला कर औसत आदमी के पक्ष में खड़ा करने का काम किया। भुवनेश्वर मिश्र ने काफी कम मात्रा में उपन्यासों की रचना की जिसमें 1893 ई. में 'घराऊ घटना' तथा 1901 ई. में की गयी उनकी रचना 'बलवंत भूमिहार' ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। वैसे उनका प्रथम उपन्यास 'राघा रमण' है, जिसके मात्र दो अध्यायों का प्रकाशन पटना से प्रकाशित हिन्दी सप्ताहिक पत्र 'बिहार बंधु' में हुआ था। इसके शेष अध्यायों का प्रकाशन अभी तक नहीं हो पाया। लेकिन इन उपन्यासों की तीव्रता के कारण उन्हे कई प्रकार की चुनौतियों और व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करना पड़ा। इनके उपन्यासों में यथार्थवादी दृष्टि के कारण कथात्मक संवेदना जितनी सघन है, उतनी ही तरल है। प्रमाणिकता और यथार्थोन्मुखता का समावेश मिश्र जी के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता है।

मूल शब्द: कथात्मक संवेदना, यथार्थोन्मुखता, प्रभावोत्पादकता, आत्मकथात्मक शैली, कौतुहलोत्पादक, द्विरागमन, संवाहनकर्ता, कुलमर्यादा, रचनाशीलता, आवेष्टन।

प्रस्तावना
उपन्यास मानसिक व्यापार और सात्विकता का बेजोड़ समन्वय है। इसके माध्यम से मनुष्य स्वयं अपने को तलाशता है। अपने को तलाशना और उसे प्रतिष्ठित करने का प्रयास ही उपन्यास की दिशा को यथार्थ की ओर मोड़ देता है। दरअसल ' हमें क्या होना चाहिए ' की हमारी दृष्टि, हमें आदर्शों की ओर लेकर चली जाती है जिसकी अंतिम परिणति महाकाव्य के रूप में होती है लेकिन ' हम जो हैं ' का अनुसंधान हमें यथार्थ की धरातल पर हीं करना होता है। इसके लिए साहित्य में उपन्यास से बेहतर अभिव्यक्ति का माध्यम और कोई दूसरी विधा नहीं हो सकती। इसमें व्यवहारिक जीवन तथा तत्कालीन परिस्थितियों पर हीं मुख्य रूप से बल होता है। यहाँ जीवन की अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक नहीं, प्रत्यक्ष होती है और पात्रों के व्यक्तित्व को नहीं, चरित्र को प्रस्तुत किया जाता है। भुनेश्वर मिश्र ने अपने उपन्यासों में जीवन के व्यापक सरोकारों को स्थान दिया है। घटनाओं और विवरणों के बीच का बेहतर समन्वय के कारण ही उनके उपन्यासों के कथानक पाठकों को बांधे रखता है। दरअसल उपन्यास की आंतरिक संरचना और वाह्य संरचना कथ्यगत विशेषताओं से ही पहचान में आती है और इसी से उपन्यास की मौलिकता का भी आकलन होता है। भुवनेश्वर मिश्र ने उन जातियों और उनके क्रियाकलापों को अपने कथ्य का उपजीव्य बनाया जिनकी ओर उनके समकालीन या पूर्ववर्ती रचनाकारों का ध्यान हीं नहीं गया।उन्होंने लोक संस्कृति को उजागर करने के लिए यथार्थपरक उपन्यासों की रचना नहीं की। उनका उद्देश्य लोक में व्यापत विषमताओं, अत्याचारों और कुरीतियों के विरूद्ध जनसामान्य की चेतना को जागृत करना था। भुवनेश्वर मिश्र के उपन्यासों के कथानक उनके अनुभव की देन हैं। इन्होंने उसी जीवन को व्यक्त किया जिसे करीब से देखा। प्रायः कथ्यगत विशेषताओं के संदर्भ में प्रभावोत्पादकता और पठनीयता का प्रश्न भी उठाया जाता है तथा समय का द्वन्द भी खड़ा किया जाता है। लेकिन भुवनेश्वर मिश्र की खासियत यह है कि वह सभी को अपनी कथावस्तु में बराबर का महत्व देते हैं। उनके लिए किसी का महत्व कम या अधिक नहीं है। मिश्र जी अपने कथ्यों को चरित्रों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यह भी उनके उपन्यासों की कथ्यगत विशेषताओं में से एक है। ई.एम.फार्स्टर के अनुसार –''बाध्य किये जाने पर चरित्र तो आ जाते हैं लेकिन बगावत की शक्ति लेकर आते हैं। उनमें भी यथार्थ की तरह बहुत सारे गुण–दुर्गुण तथा विविध प्रवृतियाँ होती है और वे अपना स्वतंत्र जीवन जीने की कोशिश करते हैं। फलस्वरूप वे उपन्यास के मुख्य योजना के प्रति बगावत का झंडा भी उठा लेते हैं।''[1] चरित्र वास्तव में कथा के भीतर की सृष्टि होते हैं। इसलिए वे कथ्यगत विशेषताओं के संवाहनकर्ता होते हैं। यदि चरित्र उपन्यासकार की पकड़ से छुट जाते हैं तो कथा संघटन में बिखराव पैदा करते हैं। चरित्रों को साधना दरअसल कथ्य योजना को साधना ही है। स्वतंत्र होने के साथ ही यदि चरित्र पर अधिक नियंत्रण भी हो जाय तो भी कथा योजना दरक जाती है। मिश्र जी इस मामले में काफी संतुलित दिखाई देते है। इन्होंने कथानक के साथ पात्रों को इस प्रकार गूँथ दिया है कि उन्हे किसी भी स्थिति में अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता है।

'घराऊ घटना' गृहस्थ जीवन के यथार्थ को चित्रण करने वाला उपन्यास है। इसमें सात घटनाओं के माध्यम से कथा को कहा गया है। रीति–रिवाज, लोकविश्वास, सामाजिक रूढ़ियाँ के साथ–साथ दामपत्य जीवन की चुनौतियों को इस उपन्यास में जो स्वर मिला है वह देखने लायक है। इस उपन्यास में मिश्र जी ने लोकजीवन को ही अभिव्यक्त करने का ही प्रयत्न किया है। इसका कारण है कि लोक जीवन उनके संस्कारों में बसा हुआ है। वे किसी भी स्थिति में इससे मुक्त नहीं हो सकते। आत्मकथात्मक शैली में लिखे इस उपन्यास में भुवनेश्वर मिश्र नें चरित्रों को किस प्रकार व्यंजित किया है और वर्णन कितना सजीव है '' चंपा जितनी दौड़ती ही आई थी उतनी ही दौड़ती लौट आई और अपनी बहन के कान में कुछ कहकर एक बार मेरी ओर तेज नजर से देखती हुई हँसते–हँसते घर में चली

गयी। चंपा के गायब हो जाने के बाद मैंने अपनी श्रीमती की ओर देखा। उस वक्त उसका चेहरा देखकर बड़े–बड़े सोचनेवालों की अकल ठिकाने लग जाती। भौंह कुछ चड़े, पर टेढ़े नहीं, आँखे नीचे को झुकी, पर रूखी नहीं, लिलार तीन चिन्हों से अंकित और साड़ी के घूँघट से ढकी। मुझे मालुम हुआ कि मनमोहनी किसी गंभीर समस्या के सोंच में डूबी है।''[2] 'घराऊ घटना' के कथ्य पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध आलोचक डॉ. गोपाल राय लिखते हैं ''भुवनेश्वर मिश्र ने घराऊ घ्टना में कौतुहलोत्पादक घटनाओं का तो बहिष्कार तो किया है पर श्रृंगार में उन्होंने पर्याप्त रूचि ली है। जो संभवतः नवयुवक पाठकों के रूचि के अनुरूप है।''[3] वे आगे लिखते हैं कि ''आत्मकथात्मक शैली में लिखे गये इस उपन्यास में झगडू लाल नामक पात्र अपने दाम्पत्य जीवन के प्रसंगों का वर्णन करता है।समस्त उपन्यास में एक ही कथा है; प्रासांगिक कथाएँ नहीं है तथा जटिल वस्तु विधान का आभाव है। उपन्यासकार कथा के बीच–बीच में पाठकों को संबोधित भी करता हैं और उपन्यास के पृष्ठों में किस्सागो के रूप में, अपनी ऊँची आवाज के साथ विद्यामान भी रहता है।''[4] इस उपन्यास की कथ्यगत विशेषताओं के संदर्भ में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भुवनेश्वर मिश्र अपने मंतव्य को निपूर्णता के साथ कहने में सफल होते हैं। उपन्यास कथा के आवेष्टन में आत्मकथात्मक पुट प्रस्तुत उपन्यास को उन्नीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में ही नहीं, संपूर्ण प्रेमचंद पूर्व युगीन हिन्दी उपन्यासों में इसे अद्वितीय बना देता है। कथा में आत्मकथा की चाशनी 'घराऊ घटना के कथ्य को और प्रभावी बना देते है।'बलवंत भूमिहार' और 'घराऊ घटना' को एक साथ संकलित करा कर प्रस्तुत करने वाले डॉ. रामनिरंजन परिमलेन्दु के अनुसार ''हिन्दी में उन्नीसवीं शती के उपन्यासों में 1893 ई. में प्रकाशित 'घराऊ घटना' सर्वाधिक मौलिक उपन्यासों में से एक है। भुवनेश्वर मिश्र के उपन्यासों की अकाट्य मौलिकता बहुत महत्वपूर्ण है। अपने युग या उन्नीसवीं शताब्दी के उपन्यासों से बिलकुल अलग हटकर, आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया, यह उपन्यास 'घराऊ घटना' पारिवारिक अनुभवों से समृद्ध है। इसका घरेलुपन ही उपन्यास साहित्य की विशेषता है। कथा–विकास के क्रम में परिवार और समाज की अनेक समस्याओं, रूढ़ियों आदि का चित्रण ईमानदारी के साथ लेखक करता रहा है। जैसे– बाल–विवाह की झाँकी, घर की बड़ी–बूढ़ी महिलाओं की पुत्र वधू की लालसा, विवाह के बाद द्विरागमन में वर्षों का विलम्ब, परिणय पूर्व वधु दर्शन का परम्परागत निषेध का अच्छा चित्रण यहाँ हुआ है।''[5]

इसी प्रकार 'बलवंत भूमिहार' के कथानक पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि बलवंत भूमिहार की कथा का आधार पूँजीवादी वर्ग का दमन, शोषण, अन्याय और अत्याचार है। इस उपन्यास का आरंभ करते हुए भूमिका में ही उन्होंने लिखा कि '' इस पुस्तक को आरंभ करने के समय मेरी इच्छा न तो इसे इतनी बड़ी बनाने की है और न ही प्रकाशित करने की थी। मेरे मित्र ने मुझे एक छोटा उपन्यास लिखने को कहा था। मैंने उनकी इच्छानुसार यह पुस्तक लिखी। परन्तु जिस अभिप्राय से उन्होने लिखने का अनुरोध किया वह न हो सका ।''[6] दरअसल, लेखक का विचार जब तक उसके लेखन में रचनाशीलता को नियंत्रित करता है तब तक कथानक, पात्र–योजना, परिवेश, भाषा और शिल्प सब कुछ उसके अनुरूप होता है, लेकिन जैसे ही रचनाशीलता का संचालन व्यवहारिक जीवन की परिस्थितियाँ करने लगती है तो यथार्थ के धरातल पर रचनाकर्म लेखक के इच्छा के अनुरूप नहीं रह पाता है। यही कारण है कि भुवनेश्वर मिश्र जी जैसा चाहते थे, वैसा नहीं हो पाया। वैसे भी, व्यवहारिक जीवन में परिस्थितियों का संचालन कभी भी कल्पना और आदर्शवादी संस्कारों से नहीं होता है। मूल्य और आदर्श, मनुष्य के जीवन यात्रा को आसान जरूर बनाते हैं लेकिन इसको संचालित करने के लिए व्यवहारिकता और यथार्थ के धरातल पर उतरना ही होता है। आँचलिक परिवेश में इसको सबसे पहले अपने कथा के माध्यम से उजागर करने का काम भुवनेश्वर मिश्र ने ही किया। चरित्र–चित्रण, कथा को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने का मुख्य कारक होता है। भुवनेश्वर मिश्र जी चरित्र निर्माण में अत्यंत दक्ष हैं। डॉ. गोपाल राय के अनुसार–''यमुना के रूप में उपन्यासकार ने एक अत्यंत मोहक पात्र की सृष्टि की है। वह प्रेम करती है, पर कभी धैर्य नहीं खोती है। वह अपने प्रिय के लिए दुःखी है पर चंचल नहीं है। वह कुलमर्यादा का उलंग्घन नहीं करती है। वह अपना दिल दे देती है पर लज्जा का त्याग नहीं करती है। वह प्रेम और करूणा की भावना से लबालब भरी हुई, कुलमर्यादा की प्रतिमूर्ति, धैर्यशील, संयमी और शीलवंती कन्या है। हिन्दी उपन्यास में इस कोटि की एक मात्र पात्र 'बाणभट्ट की आत्मकथा'(1946) की भटिटनी है।''[7] अपनी वस्तु योजना, चरत्रि–शिल्प, भाषा, संवाद और वातावरण की दृष्टि से भी 'बलवंत भूमिहार' चकित करने वाला उपन्यास है। भुवनेश्वर मिश्र के दोनों उपन्यासों के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नगेन्द्र का कथन –''उस काल के केवल एक उपन्यासकार भुवनेश्वर मिश्र की रचना दृष्टि अपने समकालीनों से भिन्न थी। मनोरंजन और प्रचार से उपर उठकर उन्होनें उपन्यास को जीवन के अभिव्यक्ति के साधन के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। 'घराऊ घटना'(1893) और 'बलवंत भूमिहार(1901) ऐसी ही कृतियाँ थी।''[8]

समग्रता में, आँचलिकता के आधार विन्दु पर कथा और पात्रों के चरित्र का निर्माण भुवनेश्वर मिश्र ने जिस सावधानी के साथ किया है, वह अद्वितीय है। अपने परिवेश के प्रति जागरूक मिश्र जी ने अपने कथा के माध्यम से साहित्य को आम आदमी के पक्ष में खड़ा करने का काम किया। मिश्र जी के कथ्यगत विशेषताओं को जानना, अपने राज और समाज में आम जनमानस की यथार्थवादी चेतना को जानने और समझने के बराबर है। अपने समकालीन समय में प्रचार और प्रसिद्धि से दूर मिश्र जी के उपन्यासों में निहित यथार्थपरक कथ्य ने एक नई राह का अन्वेषण करते हुए हिन्दी उपन्यास को उसकी वास्तविक भूमिका प्रदान की।

संदर्भ सूची

1. ई.एम.फार्स्टर : आस्पेक्ट ऑफ द नावेल, पृ0स0–74
2. डॉ. रामनरिंजन परिमलेंदु : बलवंत भूमिहार/घराऊ घटना, भुवनेश्वर मिश्र, अध्याय –2, पृ0सं0–181
3. डॉ. गोपाल राय : हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृ0सं0–108
4. उपरिवत् , पृ0सं0–109
5. डॉ. रामनरिंजन परिमलेंदु : प्राक्कथन, बलवंत भूमिहार/घराऊ घटना,भुवनेश्वर मिश्र, पृ0सं0–7
6. भुवनेश्वर मिश्र : भूमिका, बलवंत भूमिहार, पृ0सं0–15
7. डॉ. गोपाल राय : हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृ0सं0–111
8. डॉ. नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0सं0–573